IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 3, July 2023
Impact Factor: 7.301

शान्ता कुमार की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर- हिन्दी

पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांश :- शांता कुमार हिंदी के प्रमुख कवि, कथाकार और पूर्व राजनीतिज्ञ हैं। हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रहे शांता कुमार का काव्य राजनीति के साथ-साथ गहरी राष्ट्रीय चेतना से भी संपृक्त है। उनका काव्य-संग्रह 'धरती है बलिदान की' और 'हिमतरंगिनी' विशेष रूप से राष्ट्रीय भावना के लिए चर्चित है। शांता कुमार की राष्ट्रीय चेतना का– सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

भारत को केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि हजारों साल की सांस्कृतिक परंपरा मानते हैं। हिमालय, गंगा, वेद-उपनिषद और ऋषि-परंपरा उनकी कविताओं में बार-बार आते हैं। बलिदान और देशभक्ति। स्वतंत्रता संग्राम और सीमा पर शहीद होने वाले सैनिक उनकी कविताओं के नायक हैं। 'धरती है बलिदान की' में वे लिखते हैं कि इस मिट्टी का कण-कण शहीदों के खून से सींचा गया है। सामाजिक समरसता और एकता। शांता कुमार का राष्ट्र जाति, भाषा और क्षेत्र से ऊपर है। वे पहाड़ी जीवन की सादगी को राष्ट्रीय चारित्र से जोड़ते हैं। राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार। एक राजनीतिज्ञ होते हुए भी वे राजनीति के अपराधीकरण और मूल्यहीनता पर तीखा व्यंग्य करते हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना अंध-राष्ट्रवाद नहीं है, बल्कि आत्म-आलोचना से भरी है।

इस प्रकार शांता कुमार का काव्य सांस्कृतिक गौरव, बलिदान की स्मृति, सामाजिक एकता और राजनीतिक शुचिता का आह्वान करता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना भावुक नारे नहीं, बल्कि चिंतन और कर्म की मांग करती है। यही उन्हें समकालीन कवियों से अलग करती है।

मूल शब्द - सानिध्य, सरसराता, ठठरी, उत्प्रेरित, व्यष्टि, दांपत्य, अस्मिता, सत्तापक्ष, सशक्त, पारलौकिक, परतंत्रता

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in